ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(2): 223-225
www.allresearchjournal.com
Received: 17-12-2015
Accepted: 19-01-2016

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि.प्र.

Correspondence:
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि.प्र.

रीति कालीन हिन्दी साहित्य और कवि देव

डॉ. शिवदत्त शर्मा

हिन्दी साहित्य को समय समय पर अनेक प्रतिभाशाली लेखकों ने अपनी लेखनी के माध्यम से स्मृद्ध बनाया है। रीतिबद्ध कवियों में कवि और आचार्य देव का योगदान अत्यन्त महत्व पूर्ण है। उन्होंने न केव अच्छी कविता से हिन्दी साहित्य को स्मृद्ध किया अपितु आचार्य के रूप में भी उन्होंने हिन्दी साहित्य की उल्लेखनीय सेवा की। आज हिन्दी साहित्य जिस गौरव शाली स्थान पर शोभित है उसमें देव जैसे कवियों, लेखकों का महत्वपूर्ण स्थान है।

आचार्य एवं कवि देव का पूरा नाम देवदत्त है। इनका जन्म सम्बत् 1730 में भावप्रकाश के दोहे में वर्णित है जिसे प्रक्षिप्त सिद्ध किया जा चुका है। वास्तव में इनका जन्म इटावा उत्तरप्रदेश में हुआ था। ये कश्यप गोत्र के कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। इनका निधन सम्बत् 1824 में हुआ था। ये आजीविका के लिए आजम शाह, भवानीदत्त, कुशल सिंह, तथा राजा भोगीलाल के यहां आश्रित रहे। इनके विषय में यह बात प्रचलित है कि ये किसी भी आश्रय दाता के पास टिक कर नहीं रहे तथा इस तरह सम्पूर्ण भारत का परिभ्रमण इन्होंने किया था। गुरू के विषय में हितहरिवंश के रूप में उल्लेख मिलता है।[1]

साहित्यिक योग दान

हिन्दी साहित्य को इनकी दो तरह की देन थी। आचार्य के रूप में तथा कवि के रूप में। दोनों प्रकार से इनका योग दान महत्वपूर्ण था। ऐसा कहा जाता है कि इन्होंने अपने जीवन काल में 72 ग्रंथों की रचना की थी। आचार्य शुक्ल ने इनके उपलब्ध ग्रंथों का उल्लेख किया है। वे इस प्रकार है।–

भावविलास	**शब्दरसायन**
अष्टयामी	सुखसागरतरंग
भवानीविलास	रागरत्नाकर
प्रेमतरंग	प्रेमपच्चीसी
कुशलविलास	जगदर्शन पच्चीसी
अष्टयाम	तत्वदर्शनपच्चीसी
देवचरित्र	आत्मदर्शन पच्चीसी
जाति विलास	देवमाया प्रपंच
प्रेमचन्द्रिका	सुजान विनोद

इनकी रचनाओं को विषय के आधार पर दो भागों में विभक्त किया जा सकता है।
1 काव्यशास्त्रीय ग्रंथ
2 अन्य ग्रंथ

देव का आचार्य के रूप में योगदान

आचार्य देव ने अनेक काव्यशास्त्रीय ग्रंथों की रचना की। इनके काव्यशास्त्रीय ग्रंथों में भावविलास और शब्दरसायन प्रमुख ग्रंथ हैं। इनके काव्यशास्त्रीय ग्रंथों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि इन्होंने काव्य के प्रायः सभी अंगों का सविस्तार वर्णन किया है ।अनेक ग्रंथों की रचना करने के कारण इन्होंने एक विषय की अन्य ग्रंथों में भी चर्चा की है इससे पुनरावृत्ति दिखाई देती हैं, जिसकी अनेक विद्वानों ने इनकी आलोचना की है। इनके काव्यशास्त्रीय ग्रंथों पर काव्यप्रकाश, विश्वानाथ द्वारा विरचित साहित्यदर्पण, रसतरंगिनि, रसमंजरी आदि का प्रभाव स्पष्टतः देखा जा सकता है। काव्यशास्त्रीय ग्रंथ भावविलास में रस के भेदों की चर्चा के साथसाथ नायक–नायिका भेद का वर्णन

किया गया है। शब्दरसायन में कवि ने काव्य–स्वरूप, शब्द–शक्ति, नवरस, नायिकाभेद तथा रीति गुण आदि पर विद्वत्ता पूर्ण प्रकाश डाला है। काव्यगुणों के बारे में उनका विवेचन मौलिक प्रतीत होता है। काव्यदोषों के बारे में निरूपण अनेक त्रुटियों से व्याप्त कहा जा सकता है। अलंकार निरूपण में भामह, दण्डी और अप्पयदीक्षित का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता हैं। देव ने संस्कृत के छन्द ग्रंथों से प्रेरणा ले कर पिंगलशास्त्र की रचना की। आचार्य शुक्ल ने देव के आचार्यत्व पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए लिखा है–ग्रंथों की अधिकता के बारे में ध्यान देना आवश्यक है कि देव अपने पुराने ग्रंथों के कवित्वों को इधर उधर दूसरे क्रम में लिखकर दूसरे ग्रंथ की रचना कर लेते थे।

काव्यगत विशेषताएं

इस में सन्देह नहीं है कि देवदत्त एक प्रतिभासम्पन्न कवि थे। उनका ज्ञान इस बात का प्रमाण है कि उन्हें विविध विषयों का समुचित ज्ञान था। प्रायः सम्पूर्ण भारत में घूमने के कारण उन्हें विविध संस्कृति, रहनसहन एवं रीतिरिवाजों का अच्छा ज्ञान था जो उनके काव्य में भी झलकता प्रतीत होता है। मात्र सोलह वर्ष की अल्पायु में ही उन्होंने भावविलास नामक ग्रंथ की रचना कर डाली थी। इसके अतिरिक्त उन्होंने श्रृंगाररस, और नायिका भेद तथा सम्पूर्ण काव्यों का विवेचन किया। एक कवि के रूप में उन्हें सफल कवि कहा जा सकता है।[2] संक्षेप में उनके काव्य में निम्न लिखित विशेषताएं देखी जा सकती हैं–

काव्य में श्रृंगार–वर्णन

रसराज श्रृंगार इनका मूल रस कहा जासकता है। इनका श्रृंगार वर्णन नायक–नायिका के परस्पर प्रेम और अनुराग से आप्लावित है। देव ने श्रृंगार के संयोग और वियोग वर्णन के अतिरिक्त नायक–नायिका के गंम्भीर प्रेम की व्यंजना की है। इन्होंने संयोग और वियोग श्रृंगार वर्णन में अद्‌भुत कौशल का परिचय दिया है।[3]

संयोगवर्णन– देव द्वारा संयोग वर्णन सरस ढंग से काव्य में वर्णित हुआ है। एक सन्दर्भ में नववधु का गौना होने वाला है माता सहित परिवार के अन्य लोग उसे कई प्रकार की शिक्षा देते है। उसे शील और चतुरता की सीख देते हैं। नववधु सभी की बातों को गंम्भीरता से सुनती है। सखियों की प्रेमभरी बातों को सुन कर वह रोमांचित हो जाती है, जिसका सुन्दर वर्णन कवि देव ने किया है–

गौने के चार चली दुलही, गुरु लोगन भूषन भेष बनाए।
सील सयान सखीन सिखायो, बडे सुख सासुरे हू के सुनाए।
बोलियों बोल सदा हंसि कोमल, जे मनभावन के मन भाए।
यौं सुनि औछे उरोजन पै अनुराग के अंकुर से उठि आए।

इस सुन्दर दृष्टान्त से उनकी काव्य कला का स्वतः ही परिचय हो जाता है। इसके अतिरिक्त कवि ने बडी तन्मयता के साथ नायक–नायिका के मिलन का चित्रण किया है। अनेक स्थलों पर कवि ने मिलन चित्रों में संश्लिष्ट बिम्ब प्रस्तुत किए हैं। कवि नायक–नायिका के हास–परिहास और मायके की पीडा का सुन्दर चित्रण करता है जिससे उनकी काव्य कला स्पष्ट उभर कर सामने आती है।

काव्य में वियोग वर्णन

कवि ने संयोग के साथ वियोग वर्णन भी इसी कौशल से किया है। एक स्थल पर कवि वियोग के तीव्र ताप से पीडित मछली के समान तडपती हुई विरहणी नायिका की वियोग दशा का वर्णन करता है। कठोर प्रियतम के जन्म भर नायिका की विरह व्यथा को न समझ पाने का मार्मिक वर्णन इनके काव्य में दर्शनीय है। कवि ने विरहणी नायिका की असह्य पीडा के कारण उसे मरण की अवस्था तक पहुंचा दिया है। कवि के इस वर्णन में गम्भीरता के साथ स्वाभाविकता और भावों का चित्र अति रमणीयता वर्णित हुआ है–

सौसन ही सों समीर गयो अरू औसुन ही सब नीर गयो ढरि।
तेज गयो गुन लै अपनो अरू भूमि गई तन की तनुता करि।
जीव रह्यो मिलि बेई की आस, नि आस हु पास अनास रह्यो भरि।
जा दिन ते मुख फेरि, हरे हंसि, हेरि हियो जु लियो हरि जु हरि।

प्रेमानुभूति

कवि देव की यह विशेषता रही है कि देव के श्रृंगार निरूपण का मूल आधार काम वासना न होकर प्रेम है। उनकी धारणा दूसरे कवियों से भिन्न थी। उनका मानना था कि किसी दम्पत्ति के हृदय में श्रृंगार की निष्पत्ति तभी होती है जब उनमें प्रेम की भावना उत्पन्न हो।[4] अतः श्रृंगार रस के लिए दाम्पत्य प्रेम अनिवार्य है। विषय वासना जनित श्रृंगार निरूपण प्रेम हीन कामुकता ही कही जाएगी। प्रेमहीन श्रृंगार वैश्या ही के समान है। देवदत्त कवि ने स्वकीया के प्रेम को ही सच्चा प्रेम माना है। वे मानते थे कि परकीया के प्रेम में विषय वासना का आधिक्य होता है। स्वकीया प्रेम दूध के समान सात्विक और पावन होता है। यही कारण है कि कवि ने दाम्पत्य प्रेम में लीन राधा–कृष्ण को शुद्ध प्रेम और श्रृंगार रस का आधार माना है–

सब सुख दायक नायक–नायिका जुगल अनुप।
राधा हरि आधार जास दस–सिंगार स्वरूपा।

कवि देव ने प्रेम की अनन्त महिमा का गुणगान किया है। उनके अनुसार सात्विक प्रेम को पा कर मृत जीव अमर हो जाते हैं। दाम्पत्य प्रेम की साकार प्रतिभा के रूप में राधा–कृष्ण ने ब्रज में अवतार लिया और सच्चे प्रेम को सार्थकता प्रदान की। इस तरह कवि देव ने परम्परागत प्रेम निरूपण से हट कर अलग प्रकार के प्रेम का वर्णन किया है। रीति कालीन कवियों ने जहां भोग विलास और कामुकता का वर्णन किया वहीं देव ने नायिकाओं के सच्चे प्रेम का उल्लेख किया है–

काम अंधकारी जगत् लखै न रूप कुरूप।
हाथ लिए डोलत फिरै, कामिनि छरी अप।
तातैं कामिनि एक ही कहन सुनन को भेद।
राचैं पागैं प्रेम रस मरैं मन को खेद।

देव के काव्य में सौंदर्य–निरूपण–

देव कवि के काव्य में सौंदर्य विवेचन उत्कृष्ट कोटि का मिलता है। कवि ने श्रृंगार भावना के साथ साथ अन्य सौन्दर्य वर्णन उच्च कोटि का किया है। उनके काव्य को देख कर स्पष्ट प्रतीत होता है कि उन्होंने रूपसौन्दर्य का वर्णन बडे मनोयोग से किया है। भावसौन्दर्य में भी वे बहुत प्रवीण दिखाई देते हैं। रूप सौन्दर्य के अन्तर्गत उन्होंने नायिकाओं के सौंदर्य का वर्णन बडे कौशल से किया है। इस प्रयास में उनकी मौलिकता स्पष्ट दिखाई देती है। उदाहरण स्वरूप कवि द्वारा कश्मीर की किशोरी के लावण्य का एक चित्र देखिए जिस से यह तथ्य स्वयं स्पष्ट हो जाएगा–

जीवन के रंग भरी, ईंगुर से अंगनि पै।
ऐडिन लौं आंगी छायी, छविन की भीर की।
डचके उचौहैं कुचा, झपे झलकत झीनी,
झिलमिली ओढनी किनारीदार चीर की।

इसी तरह जातिविलास में भी जाति, देश के क्रमानुसार नायिका भेद का वर्णन किया है–

अम्बर नील मिली कबरी, मुकुता लट दामिनी–सी दसहूं दिसि।

ता मधि माथे में हीरा गुह्यो, सुगमों गडि केसन की कवि सों लसि।
मांग को मूल उतै सिर फूल दव्यो, मनकै कनकावलि सौं विसि।
श्रृंग सुमेरथ मिलै रविचन्द ज्यौं पावस मास अमावस की निसि।

देव की कविता में प्रकृति चित्रण

देव प्रकृति चित्रण में भी न्यून नहीं हैं। यह सत्य है कि उनके काव्य में प्रकृति के आलम्बन रूप का तो पूर्णतया अभाव है, लेकिन उद्दीपन रूप में उन्होंने प्रकृति का सुन्दर वर्णन किया है। कवि ने अनेक भाव पूर्ण चित्र प्रस्तुत किए है। पूर्णिमा की रात का एक

सुन्दर चित्र देखिए

झहरि झहरि झीनी बूंद है परति मानों,
घहरि घहरि घटा है गगन में।
आनि कह्यो स्याम सौ चलौ झूलिबे को आज।
फूली न स्यानै भई ऐंसी हौं मग्न मैं।

अन्यत्र भी कवि ने कहीं मानवीकरण किया है तो कहीं कवि ने वसन्त. ऋतु का शिशु के रूप में भी मनोहारी चित्रण किया है। भावों के प्रवाह में वे वसन्त को कामदेव का ही बालक कह कर पुकारते हैं जो कि गुलाब को हिचकोले देकर प्रातः काल ही जगा रहा है–

डार द्रुम पालना बिछौना नव पल्लव के,
सुमन झूंगला सोहे तन छबि भारी दै।
प्वन झुलावै केकी कीर बहरावै,
वोकिल हलावै हुलसावै करतारी दौ।

इसी तरह उनके काव्य में भावरस के भी अनेक उदाहरण मिलते हैं। श्रृंगार के कवि होते हुए भी उन्होंने वीर,और शान्तरस को भी अपनी काव्य रचनाओं में प्रमुख स्थान दिया है।

आचार्य देव का काव्यांग निरूपण

भावविलास और शब्दचयन इनके दो ग्रंथ काव्य निरूपण से सम्बन्धित हैं। इनमें देव ने सभी रसों का सुन्दर वर्णन किया है तथा रसराज श्रृगार को अधिक महत्व दिया है। नायिका भेद, गुण, रीति, काव्य की आत्मा, प्रयोजन, आदि पर सविस्तार चर्चा की है। वियोग श्रृगार की सभी आठों दशाओं का भी वर्णन किया है। फिर भी यह तो सत्य है कि देव के काव्यांग विवेचन में कोई नवीनता दिखाई नहीं देती। केवल नायिका भेद में कुछ मौलिकता दिखाई देती है। इस तरह अन्य आचार्यों की ही तरह आचार्य देव भी काव्यांग निरूपण मे संस्कृत के ही आचार्यों के ऋणी हैं। रस वर्णन में भी कवि देव ने भानुदत्त की रसतरंगिनी का अनुसरण किया है।[5]

देव के काव्य में भक्ति एवं वैराग्य

कवि देव मूलतः श्रृंगारी कवि थे परन्तु आगे चलकर कवि ने भक्ति और वैराग्य का भी सुन्दर वर्णन किया है। देव चरित्र और देव शतक नामक रचनाएं भक्ति और वैराग्य से भरी पडी हैं। सम्भवतः अतिशय आर्थिक कठिनाई और अत्यधिक राग की प्रति क्रिया स्वरूप वे भक्ति और वैराग्य की ओर मुडे। इसी कुण्ठा में उन्होंने लिखा है–

ऐसा हौ जू जानतो कि जैहै तू विषै के सेग,
ऐरे मन मेरे हाथ, पांव तेरे तोरतो।
आजु लौं हों केत नर–नाहन की नाहीं सुनि,
नेह सौं निहारि हारि बदन निहारती।।

इसी तरह कुछ स्थलों पर कवि ने आत्म भर्त्सना, के अतिरिक्त मानसिक क्रान्ति, तिरस्कार मन की चंचलता एवं ईश्वर के प्रति आस्था व्यक्त की है।

कवि देव की अभिव्यंजना का स्वरूप

कवि देव ने उत्तर भारत में प्रचलित प्रायः सभी प्रकार के शब्दों का सुन्दर प्रयोग किया है। उन्होंने संस्कृत के तत्सम, तद्भव, प्राकृत्, अपभ्रंश फारसी, तथा अन्य उत्तर भारत की बोलियों के शब्दों का सुन्दर वर्णन किया है। बोल चाल के शब्दों के प्रयोग से कविता में सुन्दर प्रवाह देखने को मिलता है। अनेक प्रकार के अलंकारों के प्रयोग से भी काव्य में चमत्कार पैदा हुआ है। अनुप्रास, यमक, तो देव की कविता में प्रायः मिलते ही हैं इसके अतिरिक्त उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिश्योक्ति, संदेह, विभावना, दीपक, विरोधाभास आदि अलंकारों का भी सुन्दर प्रयोग इनकी कविता में मिलता है।[6]

आचार्य शुक्ल ने देव की कविता के विषय में लिखा है– इनका अर्थ सौष्ठव तथा अर्थ गौरव विरले ही कवियों में मिलता है। रीति काल में ये प्रौढ तथा प्रतिभासम्पन्न कवि थे। इसमें सदेह नहीं है। इनकी छनद योजना, तथा अभिव्यंजना अतीव सुन्दर बन पडी है। सवैया, कवित्त तथा दोहा इनके प्रसिद्ध छन्द हैं। दुर्मिल, मंजरी, मतगयन्द आदि छन्दों का भी अनेकशः प्रयोग इनकी कविता में मिलता है। बिम्ब विधान में सम्भवतः देव सबसे श्रेष्ठ कवि हैं।[7]

इस तरह निस्सन्देह भाव और भाषा दोनों दृष्टियों से देव का काव्य उच्च कोटि का है। आचार्यत्व के इलावा उनका कवि रूप किसी भी तरह से न्यून नहीं आंका जा सकता। रीति बद्ध कवियों में देव का स्थान महत्व पूर्ण है।

सन्दर्भ सूचि

1 डॉ. नगेन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ. 134
2 शिवदान सिंह चौहान हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष पृ. 56
3 डॉ. बच्चन सिंह आधुनिक हिन्दी साहित्य पृ. 154
4 डॉ. भोला नाथ तिवारी हिन्दी साहित्य पृ. 32
5 डॉ. नगेन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ. 76
6 डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास पृ. 67
7 डॉ. राम खिलावन पाण्डे हिन्दी साहित्य का नया इतिहास पृ53